WWW.GRADESETTER.COM

# NOTES ON MUSIC

## Definition of the following terms : -

वर्ण, ग्राम, मूर्च्छना, अलंकार, गमक, कण, ताल

**वर्ण →**

गाने की जो क्रिया है, उसे वर्ण कहते हैं। वर्ण चार प्रकार के होते हैं।

1) स्थायी 2) आरोही 3) अवरोही 4) संचारी

**ग्राम →**

जिस प्रकार कुटुंब में लोग मर्यादा की रक्षा करते हुए इकट्ठे रहते हैं, उसी प्रकार वादी - संवादी स्वरों का वह समूह जिसमें श्रुतियां व्यवस्थित रूप से विद्यमान हों, और जो मूर्च्छना, तान आदि का आश्रय हो उसे ग्राम कहते हैं।

**मूर्च्छना →**

क्रमबद्ध सात स्वर मूर्च्छना कहलाते हैं।

उदाहरण → यदि हम सं षड्ज (सा) ग्राम में आरंभ का स्वर सा मान लें तो सा, रे, ग, म, प, ध, नि हमारी षड्ज ग्राम में सा स्वर की मूर्च्छना हुई। यदि सा का स्थान पर आरंभ का स्वर नि मान लें तो नि, सा, रे, ग, म, प, ध हमारी षड्ज ग्राम में निषाद की मूर्च्छना हुई। अन्य सभी स्वरों की मूर्च्छनाएं इसी प्रकार से समझी जाती हैं।

**अलंकार →**

कुछ नियमित वर्ण समुदायों को अलंकार कहते हैं। अलंकार का अर्थ है, आभूषण या गहना। जिस प्रकार आभूषण शरीर की सुंदरता बढ़ाते हैं। उसी प्रकार अलंकार के प्रयोग से गायन की शोभा बढ़ती है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

गमक →

आंदोलन के द्वारा जिन स्वरों में कंपन पैदा हो उसे गंभीरता पूर्वक उच्चारण करना ही गमक कहलाता है।

जैसे :- स अ अ अ रे ए ए ए ग अ अ अ इत्यादि।

कण →

जो छोटे-छोटे स्वर मुख्य स्वरों के अतिरिक्त उनके ऊपर लिखे रहते हैं, उसे कण कहते हैं। इनके प्रयोग से स्वरों में अधिक मिठास उत्पन्न होती है।

ताल → समय के माप को ताल कहते हैं।

1) Write short notes on classification of Ragas ?

→ वर्गीकरण के प्राकृतिक नियम हैं। प्रकृति में स्थान स्थान पर वर्गीकरण मिलता है।

मनुष्य ने अपनी बनायी हुई चीजों का वर्गीकरण विभिन्न नामों में किया। अध्ययन में सरलता, ज्ञान वृद्धि तथा विषय-विस्तार के लिए इसने प्रत्येक वस्तु को विभिन्न भागों में विभक्त किया।

संगीत में भी वर्गीकरण हुआ —

रागों की वर्गीकरण की परंपरा अति प्राचीन काल से आज तक चली आ रही है। वर्गीकरण के इतिहास को तीन कालों में बाँटा जा सकता है।

1) प्राचीन काल।
2) मध्य काल।
3) आधुनिक काल।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

1) प्राचीन काल →

(i) जाति वर्गीकरण → प्राचीन काल में कुल तीन ग्राम षड्ज, मध्यम और गंधार माने जाते थे। गंधार ग्राम प्राचीन काल में ही लुप्त हो गया। भरत द्वारा लिखे गये शास्त्र में वर्णन है, कि शेष दो ग्रामों में से 18 जातियाँ उत्पन्न हुई। इन जातियों को शुद्ध और विकृत स्वरों में बाँटा गया।

जाति और राग एक-दूसरे के पर्यायवाची शब्द कहे जा सकते हैं। जिस प्रकार आजकल राग-गायन प्रचलित है, उसी प्रकार प्राचीन काल में जाति-गायन प्रचलित थी। स्वर और वर्ण युक्त सुंदर रचना को जाति कहते थे, और यही परिभाषा राग की भी है।

(ii) ग्राम-राग वर्गीकरण → जाति वर्गीकरण के पश्चात् ग्राम-राग वर्गीकरण का जन्म हुआ। प्राचीन काल में ग्राम-राग भी जाति अथवा राग के समान सुंदर और गाने योग्य रचनाएँ थीं।

(iii) रत्नाकर के दस विधि राग वर्गीकरण → तेरहवीं शताब्दी में पंडित सारंगदेव द्वारा लिखित संगीत रत्नाकर में समस्त रागों को दस वर्गों में विभाजित किया गया है, जिनके नाम हैं —

(१) ग्राम राग (२) राग (३) उपराग (४) भाषा (५) विभाषा (६) अंतरभाषा (७) रागांग (८) भाषांग (९) उपांग (१०) क्रियांग

(iv) शुद्ध, छायालग और संकीर्ण वर्गीकरण → प्राचीनकाल में रागों को शुद्ध, छायालग और संकीर्ण वर्गों में विभाजित करने की प्रथा प्रचलित थी। जो राग स्वतंत्र होते थे, और जिनमें किसी भी राग की छाया नहीं आती वे शुद्ध राग (छायालग तथा), और जिनमें के एक राग की छाया आती थी वे छायालग

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



जिनमे एक से अधिक रागो की छाया आती थी, वे संकीर्ण राग कहलाते थे।

2) मध्य काल →

(i) शुद्ध, छायालग और संकीर्ण → मध्य काल मे भी यह विभाजन प्रचलित रहा और इनके अर्थ मे कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

(ii) मेल राग वर्गीकरण → 'मेल' को आधुनिक ठाठ का पर्यायवाची कहा जा सकता है। जिस प्रकार से आधुनिक काल मे ठाठ राग प्रचलित है, उसी प्रकार मध्य काल मे मेल राग प्रचलित था।

(iii) राग - रागिनी वर्गीकरण → मध्य काल की ये विशेषता थी कि कुछ रागो को स्त्री और कुछ को पुरुष मानकर रागो कि वंश परंपरा मानी गयी। इसी विचारधारा के आधार पर राग - रागिनी परंपरा का जन्म हुआ।

3) आधुनिक काल →

(i) शुद्ध, छायालग और संकिर्ण वर्गीकरण → आधुनिक काल मे यह विभाजन मात्र के लिए शेष रहा।

(ii) राग - रागिनी वर्गीकरण → कुछ पुराने संगीतज्ञ इसी विभाजन को मान्यता देते रहे। परंतु ये वर्गीकरण समय के साथ तेजी से कम होती जा रही है।

(iii) ठाठ राग वर्गीकरण → मध्य काल मे, मेल राग वर्गीकरण प्रचलित था। और यह ठाठ का पर्याय वाची है, अर्थात दोनो का अर्थ एक ही है। आधुनिक काल मे यह पद्धति ठाठ - राग वर्गीकरण के नाम से प्रचार मे आयी। इसका मुख्य श्रेय स्व॰ भातखंडे जी को है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM


इन्होंने समस्त रागों को 10 अंगों में विभक्त किया। जिनके नाम हैं —

(a) बिलावल (b) खमाज (c) कल्याण (d) भैरव
(e) आसावरी (f) भैरवी (g) पूर्वी (h) मारवा
(i) तोड़ी (j) काफी

Time theory of Raga →

* Write short note on time theory of Raga.
रागों के समय निर्धारण के सिद्धांत पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करें।

रागों का समय निर्धारण उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में रागों का प्रयोग काल दिन और रात्री के 24 घंटों को दो भाग करके बांटा गया है। पहला भाग 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि तक और दूसरा भाग 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन तक माना जाता है। पहले भाग को पूर्वांगवादी तथा दूसरे भाग को उत्तरांगवादी कहते हैं।

सप्तक के दो भाग किए गए हैं।
(1) पूर्वांगवादी → पहला भाग (2) उत्तरांगवादी → अंतिम भाग

सा रे ग म प ध नी सां रें गं मं पं धं नीं

मध्य सप्तक — तार सप्तक

सा़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नी़

मंद्र सप्तक

सप्तक का पूर्वांग या सप्तक का प्रथम भाग सा, रे, ग, म कहलाता है। तथा सप्तक का उत्तरांग भाग प ध नी कहलाता है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



सभी प्रकार के ग्रंथकार इस मत से सहमत है कि रागों को इनके गायन समय अनुसार ही गाना चाहिए। भैरव प्रातः काल में ही गाया जाता है। और मालकौंस रात्रि को गाया जायेगा।

आजकल रागों के गायन समयानुसार रागों के तीन वर्ग किये गए हैं।

1) रे ध कोमल स्वरों वाले राग।

2) रे ध शुद्ध स्वरों वाले राग।

3) ग नि कोमल स्वरों वाले राग।

1) रे ध कोमल स्वरों वाले राग →
इन कोमल स्वरों वाले रागों को संधि प्रकाश राग कहा जाता है। और यह संधि प्रकाश समय में गाये बजाये जाते हैं। संधि प्रकाश समय उस समय को कहते हैं, जब दिन और रात का मेल होता है। ये समय इन पंक्तों में दो बार आता है। एक सूर्यास्त के समय और दूसरा सूर्योदय के समय। प्रातःकालीन संधिप्रकाश रागों में अधिकतर मध्यम कोमल शुद्ध होगा। और सांयकालीन संधिप्रकाश रागों में अधिकतर मध्यम तीव्र होगा।

2) रे ध शुद्ध स्वरों वाले रागों का गायन - वादन समय रे ध कोमल स्वरों के बाद होता है। ये राग सुबह तथा शाम 7 से 10 बजे के मध्य गाये - बजाये जाते हैं।

3) ग नि कोमल स्वरों वाले राग → रे ध शुद्ध स्वरों के रागों के गायन समय के बाद ग नि कोमल स्वरों वाले रागों का गायन - वादन होता है। ये राग सुबह से शाम 10 से 4 बजे तक गाये बजाये जाते हैं।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



रागों के गायन समय निर्धारण में म या मध्यम का महत्व → इनके समय निर्धारण में मध्यम स्वर अपना विशेष महत्व रखता है। इनके प्रयोग से ये पता चल जाता है कि ये राग दिन का है, अथवा रात का। जिन रागों में तीव्र म का प्रयोग होता है वे राग शाम और रात को गाये जाते हैं। और जिन रागों में शुद्ध म लगता है वे प्रातः काल और दिन में गाये - बजाये जाते हैं।

## :- संगीत रत्नाकर :-

सारंग देव का समय 1210 से 1247 ई० के मध्य का माना जाता है। ये देवगिरि के यादव वंशीय राजा के दरबारी संगीतज्ञ थे। तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पं० सारंग देव ने संगीत रत्नाकर ग्रंथ की रचना की। इसमें नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम, मुर्च्छना, जाति इत्यादि का विवेचन भलीभाँति किया गया है। दक्षिणी और उत्तरी संगीत विद्वान इस ग्रंथ को संगीत का आधार ग्रंथ मानते हैं। इसमें गायन, वादन तथा नृत्य तीनों का विवरण है। इसमें नाद का स्वरूप नादोत्पत्ति और उसके भेद, ग्राम, मुर्च्छना, वर्ण, अलंकार तथा जातियों का विस्तृत वर्णन दिया गया है।

यद्यपि सारंगदेव ने श्रुति, स्वर, ग्राम, जाति आदि के वर्णन में भरत का ही अनुकरण किया है। फिर भी इनकी पद्धति में प्रगति और विकास के लक्षणों का कोई अभाव नहीं है। मुर्च्छनाओं की मध्यम सप्तक में स्थापना, विकृत स्वरों की कल्पना इत्यादि रत्नाकर की मौलिकता प्रकट करती है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

## मध्य काल में संगीत पारिजात :-

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उस समय के संगीत विद्वान पं० अहोबल ने सन् 1650 ई० के लगभग हिन्दुस्तानी संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ संगीत पारिजात लिखा। अहोबल ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने संगीत पारिजात में वीणा पर स्वरों का स्थान निश्चित करने के लिए एक नवीन पद्धति अपनायी। अहोबल का शुद्ध ठाठ भी लोचन की भांति आजकल प्रचलित ठाठ के समान था। इन्होंने शुद्ध, विकृत कुल मिलाकर 29 स्वर बताये। इस ग्रंथ में लगभग 122 रागों का वर्णन मिलता है। प्रत्येक राग में लगने वाले स्वरों की आरोह, अवरोह, ग्रह, अंश, न्यास, और मुर्च्छना के स्वरों का वर्णन मिलता है। उनका कहना है, जहाँ उन्होंने न्यास और अंश स्वरों का उल्लेख नहीं किया है, वहाँ उन स्वरों के स्थान पर षड्ज यानि सा को ही मानना चाहिए। जिस स्वर समूह से राग प्रारंभ होता है, उसे उद्ग्राहकारक तान कहा गया है। इस प्रकार की उद्ग्राहकारक तान प्रत्येक राग की परिभाषा के बाद में दी गई है।

## पं० भातखण्डे का कार्य और उनका विवेचन :-

आधुनिक काल में पं० विष्णु नारायण भातखण्डे के नाम से जाने वाले व्यक्ति का जन्म मुंबई प्रांत के बालकेश्वर नामक स्थान पर 10 अगस्त 1860 ई० को हुआ। इन्होंने 1883 ई० में बी० ए० और 1890 में एल० एल० बी० की परीक्षा पास की। इनकी लगन आरंभ से ही संगीत की ओर थी। 1904 ई० में इनकी ऐतिहासिक संगीत यात्रा आरंभ हुई। जिसमें इन्होंने भारत के सैकड़ों स्थानों का भ्रमण करके

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

संगीत संबंधित साहित्य की खोज की। इन्होंने बड़े-बड़े गायकों को सुना और उनकी स्वरलिपि तैयार कर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका के नाम से एक ग्रंथमाला प्रकाशित करायी। जिसके 6 भाग हैं। संस्कृत भाषा में भी इन्होंने लक्ष्य संगीत और अभिनव राग मंजरी नामक पुस्तकें लिखकर प्राचीन संगीत की विशेषताओं तथा उसमें फैली हुई भ्रांतियों पर प्रकाश डाला। श्री भातखण्डे जी ने अपना शुद्ध थाट बिलावल मानकर थाट पद्धति स्वीकारते हुए दस थाटों में से बहुत से रागों का वर्गीकरण किया। 1916 ई० में इन्होंने बड़ौदा में एक विशाल संगीत सम्मेलन किया। इसमें संगीत के विद्वानों द्वारा संगीत के अनेक तथ्यों पर गंभीरता पूर्वक विचार किया, और एक All India Music Academy की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार हुआ। इस संगीत सम्मेलन में भातखण्डे जी के संगीत संबंधित जो महत्वपूर्ण भाषण हुए, वे अंग्रेजी में A short historical survey of music of upper India नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। बाद में इनके प्रयत्नों से अन्य कई स्थानों पर संगीत सम्मेलन हुए तथा संगीत विद्यालयों की स्थापना हुई जिसमें लखनऊ का मैरिस म्युजिक कॉलेज (भातखण्डे संगीत विद्यापीठ) ग्वालियर का माधव संगीत महाविद्यालय तथा बड़ौदा का म्यूजिक कॉलेज विशेष उल्लेखनीय है। इस प्रकार इन्होंने अपने अथक परिश्रम द्वारा संगीत की महान् सेवा की। और संगीत जगत में एक नवीन युग स्थापित कर अंत में 19 सितंबर 1936 ई० को स्वर्ग सिधार गए।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



Write short history of the following Ragas →

1) बिहाग → यह बिलावल थाट का राग है। इसमें दोनों मध्यम लगते हैं। तीव्र मध्यम विवादी के रूप में प्रयुक्त होता है। यदि ये विवादी के रूप में प्रयुक्त होता है। किन्तु आजकल ये बिहाग के लिए एक आवश्यक स्वर बन गया है। आरोह में ऋषभ व धैवत वर्जित है, अवरोह सम्पूर्ण है। वादी स्वर गंधार व संवादी निषाद है। गायन समय रात्रि का दूसरा पहर है। इसका आरोह अवरोह इस प्रकार है —

आरोह — सा ग म प नी सां

अवरोह — सां नी ध प म ग रे सा

2) राग भैरव → ये भैरव थाट का आश्रय राग है। इसमें ऋषभ, धैवत कोमल एवं शेष स्वर शुद्ध हैं। ये सम्पूर्ण - सम्पूर्ण जाति का राग है। इसके ऋषभ एवं धैवत स्वर आंदोलित हैं। वादी धैवत व संवादी ऋषभ है। यह प्रातःकालीन (सन्धि प्रकाश) राग है। इसका आरोह अवरोह इस प्रकार है —

आरोह → सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह → सां नी ध प म ग रे सा

3) केदार → ये कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। वादी मध्यम संवादी षड्ज है। गायन समय रात्रि का प्रथम पहर है। इसका आरोह अवरोह इस प्रकार है —

आरोह — सा, म, म प, ध प, नि ध, सां

अवरोह — सां नी ध प म, प म रे सा

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

4) भीम पलासी → ये काफी थाट का राग है। इसमें गन्धार, निषाद कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ एवं धैवत वर्जित हैं तथा अवरोह सम्पूर्ण है। ~~ ~~ वादि मध्यम और संवादी षड्ज है। गायन का समय दिन का तीसरा पहर है। इसका आरोह अवरोह इस प्रकार है —

आरोह → नि सा ग म प नि सां

अवरोह → सां नी ध प म ग रे सा

5) देश → ये खमाज थाट का राग है। इसमें दोनो निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसके आरोह में गन्धार एवं धैवत वर्जित हैं। इसका वादी ऋषभ एवं संवादी पंचम है। गायन-वादन समय रात्रि का दूसरा पहर है।

अवरोह → सां नी ध प म ग रे, ग सा

आरोह → नी सा रे म प नी सां

6) राग केदार →

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

— ःजीवन टिप्पणी ः—

उस्ताद अब्दुल करीम खान → यह किराना के निवासी थे। इनके घराने में प्रसिद्ध गायक व सारंगी वादक हुए। इन्होंने अपने पिता काले खान तथा चाचा अब्दुल्ला खान से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी। वे बचपन से ही बहुत अच्छा गाने लगे थे। पन्द्रहवें वर्ष में प्रवेश करते हुए इन्होंने संगीत कला में इतनी उन्नति कर ली कि इनको तत्कालीन बड़ौदा नरेश ने अपने यहाँ दरबार गायक नियुक्त कर लिया। बड़ौदा में तीन वर्ष तक रहने के पश्चात् 1902 ई० में प्रथम बार ये मुंबई आये। मधुर और सुरीली आवाज तथा हृदयग्राही गायकी के कारण दिनों दिन उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई। सन 1916 ई० के लगभग पूना में इन्होंने आर्य संगीत विद्यालय की स्थापना की विभिन्न संगीत जलसों के द्वारा धन एकत्रित कर के वह इस विद्यालय को चलाते थे। गरीब विद्यार्थियों का सभी खर्च विद्यालय उठाता था।

महाराष्ट्र में मींड और कणयुक्त गायकी के प्रसार का श्रेय खान साहब को ही है। सुरीले पन के कारण इनका संगीत अंतःकरण को स्पर्श करने की क्षमता रखता था। आपका स्वभाव अत्यंत शांत एवं सरल था। वे एक फकीरी वृत्ति के गायक थे। खान साहब कि शिष्य परंपरा बहुत विशाल थी। इनके अनेक शिष्य एवं शिष्याओं द्वारा इनका नाम रौशन हो रहा है। ये 27 अक्टूबर 1937 ई० को स्वर्ग सिधार गए।

— ः पं० कृष्ण राव शंकर ः—

इनका जन्म 26 जुलाई सन 1894 ई० में ग्वालियर के एक दक्षिणी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

स्व० पं० शंकर राव एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। जिन्होंने ग्वालियर के प्रसिद्ध कलाकार हद्दू खान तथा नत्थू खान से संगीत की शिक्षा पायी थी। और बाद में उस्ताद निसार हुसैन खान की देख - रेख में भारतवर्ष पर संगीत की कठोर साधना की। इस प्रकार पं० शंकर राव जी तत्कालीन संगीत के प्रसिद्ध आचार्यों द्वारा पूर्ण ज्ञान और अनुभव प्राप्त करके अपने समय के महान संगीतज्ञ सिद्ध हुए आज भी ग्वालियर वासी उनका स्मरण गर्व के साथ करते हैं।

इनके शास्त्रीय ज्ञान और स्वर ताल पर पूर्ण अधिकार को देश के बड़े से बड़े विद्वानों ने मुक्त रूप से स्वीकार किया। लयकारी के कार्य में वे अद्वितीय समझे जाते थे। सन् 1959 ई० में इनको राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका स्वभाव अत्यंत शांत एवं सरल था। सन् 1962 ई० में खैरागढ़ विश्व विद्यालय ने इनको डॉक्टरेट की उपाधि दी। 1973 ई० में भारत सरकार ने इनको पद्मभूषण के अलंकार से विभूषित किया। पं० कृष्ण राव शंकर ग्वालियर घराने के प्रतिनिधि कलाकार थे। इनका देहांत 22 अगस्त 1989 ई० में हुआ।

## :- उस्ताद फैयाज खान :-

सन् 1886 ई० में आगरा के पास सिकंदरा नामक स्थान पर अपने मामा के घर उनका जन्म हुआ। पिता श्री सफदर हुसैन इनके जन्म से तीन - चार माह पहले हि जन्नत नसीब हो गए। अतः ननिहाल में हि नाना गुलाम अब्बास खान साहब ने इनका पालन - पोषण किया और बाल्य काल से 25 वर्ष की उम्र तक इन्होंने नि इन्हें संगीत की शिक्षा दी। इनके संबंधी नाना फिदा हुसैन खान से भी इन्हें

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

संगीत की तालीम हासिल हुई। कुछ दिनों बाद ये मैसूर चले गए। वहीं सन 1921 में इनको आफताबे मौसीकी की उपाधि मिली तत्पश्चात् ये बड़ौदा के दरबारी गायक नियुक्त हुए। जहाँ उन्हें ज्ञान रत्न की उपाधि प्राप्त हुई। उस्ताद फैयाज खान ध्रुपद तथा ख्याल शैली के श्रेष्ठतम गायक थे। श्रोताओं के आग्रह पर कभी-कभी ठुमरी एवं गजल भी बड़ी खूबी के साथ पेश करते थे। इनका व्यक्तित्व भी बड़ा प्रभावशाली था। दृढ़ और ऊँचे पुष्ट शरीर और शेरवानी और साफे की पोशाक में उनकी शख्सियत अपना अलग मुकाम रखती थी। आवाज सुरीली बुलंद तथा धाराप्रवाह थी। स्वरों पर सिगर हो जाना इनके गायन की प्रमुख विशेषता थी। इनके कुछ रिकॉर्ड भी बने। 5 नवंबर 1950 को बड़ौदा में इनका निधन हो गया।

:- उस्ताद बड़े गुलाम अली खान :-

इनका मूल निवास स्थान पंजाब प्रांत में कुसुर नामक ग्राम था। किंतु जन्म 1902 ई० में लाहौर में हुआ। इनके पिता जी अलीबख्श प्रसिद्ध संगीतकार थे। गुलाम अली खान के तीन छोटे भाई बरकत अली खान, मुबारक अली खान तथा अमान अली खान भी श्रेष्ठ कलाकार बने। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण इनको सारंगी वादन सीखना पड़ा परंतु गाने का अभ्यास निरंतर चलता रहा। कुछ दिनों बाद आप मुंबई में आकर उस्ताद सिंधी खान से संगीत की शिक्षा हासिल की। फिर इन्होंने देश के बड़े-बड़े नगरों में आयोजित संगीत सम्मेलन में हिस्सा लिया। कण स्वर लगाने में इनको महारथ हासिल था। संगीत नाटक एकेडमी पुरस्कार प्राप्त पद्मभूषण उस्ताद बड़े गुलाम अली खान एक ऐसे गायक थे जिन्हें लोग आज तक

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

स्मरण करते है। सन् 1961 ई० में इन्हें लकवे की बीमारी ने घेर लिया और 23 अप्रैल 1968 ई० को हैदराबाद में इनका निधन हो गया।

## पं० पन्ना लाल घोष :-

इनका जन्म 31 जुलाई 1911 ई० को बारीसाल पश्चिम बंगाल में (अभी बंगलादेश में है) हुआ था। उनका परिवार पहले अमरनाथ गंज नामक गाँव में रहता था। परंतु बाद में फतेहपुर नामक शहर में आ गया। उनका जन्म संगीतकारों के खानदान में हुआ था। उनके दादाजी हरि गोपाल घोष पिताजी अक्षयकुमार घोष और मामा भाव रंजन प्रसिद्ध कलाकार थे। उनके भाई निखिल घोष एक प्रसिद्ध तबला वादक थे। पन्ना लाल घोष को संगीत ग्रहण करने की असीमित क्षमता थी। इन्होंने अपना पहला गुरु खुशीद अहमद खान को माना। इनको उस्ताद अलाउद्दीन खान से भी संगीत सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्होंने 1938 में यूरोप में शास्त्रीय संगीत का प्रदर्शन किया। उनका योगदान उपशास्त्रीय संगीत एवं फिल्मी संगीत में भी समान रूप से रहा। इनको रागतोड़ी, दरबारी तोड़ी, मियाँ मल्हार, केदार आदि रागों पर अच्छा नियंत्रण था। पन्नालाल घोष ने ही सबसे पहले एक सुगम वाद्य लोक वाद्य को एक स्वरीय बाँसुरी जिसमें कि शास्त्रीय संगीत को बजाया जा सके का निर्माण किया। छह तारों वाला तानपुरा और सुरपेटी बनाने का श्रेय भी पं० पन्ना लाल घोष को जाता है। इस प्रकार शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर ये 20 अप्रैल 1960 को स्वर्गवासी हो गए।

WWW.GRADESETTER.COM